भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष-13, अंक-3 सोमवार, 26 मार्च' 90	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी	वार्षिक चन्दा-10.00 प्रति अंक : 1.00

मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी

श्रीजी महाराज ने ग.म.30 के वचनामृत में कहा है कि सोना (Gold) व स्त्री यह तो अत्यंत बंधनकारी है और यह दो पदार्थ का बंधन तो तब नहीं होता जब प्रकृति पुरुष से पर ऐसे जो शुद्ध चैतन्य ब्रह्म को ही एक सत्य जाने और ब्रह्म को स्वयं का स्वरूप माने–ब्रह्मरूप होकर परब्रह्म का भजन करे....उसे सोना व स्त्री बंधन नहीं करेगी, पर दूसरों को तो जरूर बंधन करेगी....।

मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी तो खुद ही शुद्ध चैतन्य ब्रह्म थे। इसलिए उनको सोना या स्त्री कैसे बंधन कर सकती थी? फिर भी महाराज ने आने वाली पीढ़ियों के लिए एक आदर्श स्थापित किया कि आज्ञा में ही सुख है व इससे भी अधिक स्वामिश्री की वास्तविक महिमा हम सभी को समझाई की कहीं हम हमारे अज्ञान के कारण उन्हें सामान्य साधु न मान बैठें...।

महाराज ने एक बार स्वामिश्री को आज्ञा करी कि तुम बुरानपुर जाओ और वहाँ बहनों की सभा में बातें करना। महाराज की बुरानपुर जाने की आज्ञा तो स्वामिश्री ने दिल से मान ली, पर अष्टप्रकार से स्त्री व धन के त्यागी होकर बहनों को उपदेश देना उन्हें योग्य नहीं लगा। दूसरी ओर महाराज की आज्ञा थी, सो स्वामिश्री थोड़े उदास हो गये। स्वामिश्री की उदासी देखकर महाराज ने उनके बालमित्र निष्कुलानंदस्वामी को कहाः 'तुम स्वामिश्री को समझाओ कि वह बुरानपुर जाये व वहाँ बहनों की सभा में बातें करें।' निष्कुलानंदस्वामी ने यह बात स्वामिश्री को पहुँचाई। यह सुनकर स्वामिश्री अतिशय रोने लगे। महाराज को जब इस बात का पता चला तो उन्होंने स्वामिश्री को अपने पास बुलाकर बिठाया और कीर्तन की एक पंक्ति बोली–

'सद्गुरु की भक्ति करे सोई,
जाके धड़ पर ना शीश होय'

यह पंक्ति बोलकर महाराज ने स्वामिश्री को अपने गले से लगाया व इस वचन को मानने में स्वयं की अत्यंत प्रसन्नता बतायी। फिर कहा : 'निर्गुणानंद जी तुम्हें स्त्री बंधन करने वाली नहीं है। हजारों स्त्रियाँ हों तब भी तुम्हें डिगा नहीं सकेगी–मैं तुम्हारे साथ ही हूँ।' बाद में स्वामिश्री सद्. कृपानंदस्वामी के मंडल में बुरानपुर गये और वहाँ दो महीने रुककर स्त्रियों की सभा में बातें करी व स्वयं को शुद्ध चैतन्य ब्रह्मस्वरूप सिद्ध किया।

स्वामिश्री के शुद्ध चैतन्य ब्रह्मस्वरूप होने में तो कोई संशय ही नहीं उठ सकता और उन्हें कुछ भी सिद्ध करने की आवश्यकता ही नहीं थी–क्योंकि त्रिलोक की

कोई व्यक्ति, शक्ति पदार्थ उन्हें खींचने की बात तो दूर, उन्हें स्पर्श मात्र भी नहीं कर सकती थी। जो दूसरों को दृष्टि मात्र से निर्गुण करे उसकी ताकत की कल्पना भी जीव कैसे कर सकता है? इतिहास साक्षी है कि पराशर ऋषि ने 60 हजार वर्ष तक तप किया व सिद्धि प्राप्त की, पर तब भी मत्स्यगंधा का हाथ देखकर उसका रूप भोगने का मन हो गया। अपनी सिद्धि से दिन को भी बादलों से ढंककर रात बना दी, पर अपनी वासना की वृत्ति पर Control नहीं कर पाये थे। इस प्रसंग से महाराज हमें यह दर्शन कराना चाहते थे कि स्वामिश्री व उनकी परंपरा के वारिसदारों के रूप में उन्होंने हमें कैसी अनमोल भेंट दी है। हम सभी गुणातीत स्वरूपों को यथार्थ पहचान पायें यहीं इस मानव जीवन की सार्थकता है.....

× × × ×

श्री 'स्वामिनारायण' जो कहेगा भावे-कुभावे पर मुक्ति लेगा..... 'काका' हे अमर रहो.....

लगभग 200 साल पहले मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी ने कहा था कि 'संसार का पत्ता-पत्ता स्वामिनारायण-स्वामिनारायण भजेगा....' –उनका यह शुभ संकल्प गुणातीत स्वरूपों के अथक् परिश्रम से अब साकार हो रहा है। भारत की राजधानी दिल्ली, पंजाब व हरियाणा केन्द्रों में स्वामिनारायण सम्प्रदाय का अत्यधिक विकास हो रहा है।

केवल गुजरात की सीमा तक ही सीमित यह सम्प्रदाय व उसका सर्वोत्तम तत्त्व ज्ञान अपनी ही कुछ संकुचित भावनाओं के दायरे में जकड़े रहन के कारण बाहर विकसित नहीं हो पाया था।

परन्तु, सर्व प्रथम सन् 1948 में बम्बई में डाभोलकर रोड पर गुरुहरि योगीजी महाराज के सामने ब्र.स्व. शास्त्रीजी महाराज ने सत्संगी बंधु श्री गुलजारीलालनंदाजी को 'अक्षपुरुषोत्तम' की मूर्ति भेंट देकर आशीर्वाद दिये कि 'महाराज जैसा मेरा सुनते है वैसा ही आपका सुनेंगे, पर आप उत्तर भारत में स्वामिनारायण भगवान के सन्देश को व्यापक बनाना'....कुछ कारणों वश यह कार्य उस समय संभव नहीं हो सका...गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज की यह इच्छा गुरुहरि योगीजी महाराज जानते थे.....सन् 1969 में लगातार कई बार अपनी बातों में इस प्रकार बोले :

* दिल्ली में चौरासी बंदरगाह की ध्वजा फरकती है। मंदिर होवे तो खूब शोभा बढ़ेगी।

17-11-1969

* दिल्ली में मंदिर करना ही है। शास्त्रीजी महाराज को पधराने हैं। हमारी तो इच्छा है ही। आगे सबकी जैसी मर्जी। 20-11-1969
* दिल्ली में झट मंदिर करो। शास्त्री महाराज को (वहाँ) बिठा देने हैं।

ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज
(योगीचरितम् प-.173)

अपने गुरु के प्रति भक्ति अदा करने, उनके संकल्प को साकार करने प.पू. काकाजी ने यह वचन झेलने का बीड़ा उठाया व संतमंडल को दिल्ली इस कार्य के लिये भेजा। दिल्ली में तो प्रत्यक्ष की निष्ठा बारे में उस समय किसी को ख्याल तक भी नहीं था। उन्होंने स्वयं भी उसके लिए दिन व रात देखे बिना अनथक् परिश्रम किया। बार-बार समय निकालकर वे दिल्ली आते... संबंध में आने वाले हरेक के जीवन में रसबस होते... बाहरी व आन्तरिक उलझनों का समाधान देते.....उनके परिश्रम के फलस्वरूप आज स्वामिनारायण का सर्वोत्कृष्ट व जीवंत गुणातीत ज्ञान अब संतों द्वारा दिल्ली-पंजाब-हरियाणा उत्तर भारत में व्यापक रूप में विकसित होता दिखाई दे रहा है और ब्रह्मरूप होकर परब्रह्म में जुड़ना-प्रत्यक्ष की निष्ठा पक्की करके आत्यंतिक मुक्ति के पथ पर देह रहते हुए अक्षरधाम का सुख भोगने का भगीरथ कार्य संतों द्वारा सुलभ हो रहा है। संतों, युवकों, बहनों, गृहस्थों के एक आत्मीय समाज का सहज दर्शन हरेक को

होता है। स्वामिनारायण के संतों की पवित्रता, मर्यादा, वर्तन सभी को अपनी ओर आकर्षित करता है।

प.पू. काकाजी करीब 15 साल पहले बार-बार अपनी बातों में कहते थे 'दिल्ली में अद्‌भुत कार्य होगा व International आध्यात्मिक संशोधन केन्द्र का विकास होगा।' उनकी बात पर तब हम विश्वास नहीं कर पाते थे; क्योंकि यहाँ कुछ समाज दिखाई ही नहीं पड़ता था, पर उनकी पारदर्शक दृष्टि तो भविष्य देख रही थी..... !

आज दिल्ली में अशोकविहार में 'स्वामिनारायण' के भव्य मंदिर का निर्माण कार्य चल रहा है और मंदिर तक पहुँचने के मार्ग का नाम **स्वामिनारायण मार्ग व काकाजी लेन** रखे जाने का शुभ कार्य भी इन्हीं दिनों सम्पन्न हुआ है। लाखों मुमुक्षुओं के कल्याण का खुल्ला मार्ग....प्रभु का मार्ग व संत मार्ग दोनों का समन्वय....वैसे भी प्रभु तक पहुँचने के लिए संत की अनिवार्यता है ही। प्र.ब्र.स्व.प.पू. पप्पाजी, प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी, पू. साहेब व संत मंडल 24th Feb. 90 की सायं 5-00 बजे इस शुभभकार्य की अनावरण विधि के लिए एकत्रित हुए....गुजरात, बम्बई, पंजाब, दिल्ली व विदेश से आये हरिभक्तों का विशाल समूह सारी सड़क पर दिखाई पड़ रहा था। सभी के मुख पर एक अनोखी उमंग व उल्लास दिखाई पड़ता था। पर साथ-साथ हरेक के हृदय में एक कसक थी—काश ! हमारे प्राण प्रभु प.पू. काकाजी भी स्थूल शरीर से इस परम आनंद की घड़ी में हमारे बीच होते तो आनंद का पार न रहता.....पर अपने दिव्य स्वरूप से तो वह अभी भी पल-पल हमारे बीच हाजराहजुर है....

'ठाकुरजी' का पूजन करके प.पू. पप्पाजी ने 'स्वामिनारायण मार्ग' का अनावरण किया....एक दिव्य उद्‌घोष से सारा वातावरण गूंज उठा....सड़क पर आने जाने वाले आश्चर्य से देख रहे थे। 'स्वामिनारायण मार्ग' की अनावरण विधि के पश्चात् सारा समूह 'काकाजी लेन' की अनावरण विधि की ओर उमड़ पड़ा.....'काकाजी महाराज की जय' के गूंज भरे नारे के साथ प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी ने 'काकाजी लेन' का अनावरण किया.....तालियों की गड़गड़ाहट से सबने खुशी व्यक्त की। इस विधि के बाद सभा का आयोजन था। सभा में सभी गुणातीत स्वरूपों ने बताया कि समग्र स्वामिनारायण संप्रदाय के लिए यह एक ऐतिहासिक घटना बनी है व आशीर्वाद दिये—'जो भी इस मार्ग से गुजरेगा जाने-अनजाने 'स्वामिनारायण' नाम पढ़ेगा—बोलेगा, वह कल्याण का अधिकारी होगा !' समय-समय पर युग पुरुषों ने अलग-अलग ढंग से भगवान के 'नाम' की अद्‌भुत महिमा बतायी है।

''तुलसी जाके मुखन से, भूले निकसे राम,
ताकी पग की पहनियाँ, मेरे तन की चाम''

—यूँ कहकर तुलसीदासजी ने भी भगवान 'राम' के नाम की महिमा गायी है। इतिहास भी साक्षी है कि शुद्ध ब्राह्मण अजामील पंच महापापी बनकर संसार में दुःखी हो गया था, पर संतों को उस पर दया आयी और उसके लड़के का नाम 'नारायण' रखवाया....और अंत समय उसके मुख से अपने पुत्र का नाम 'नारायण-नारायण' ही निकलते रहने पर उसकी पुकार सुनकर प्रभु ने दर्शन दिये व उसका कल्याण किया !!! जाने-अनजाने पुत्र मोहवश में भी प्रभु का नाम लेना कैसा कल्याणकारी ! प्रभु की यह दयालुता को हम नाप भी कैसे पायेंगे?

भगवान स्वामिनारायण ने भी लगभग 209 साल पहले खूब करुणा करके मानव जाति को आशीर्वाद दिये थे कि जो भी जाने-अनजाने 'स्वामिनारायण' नाम लेगा उसका कल्याण मैं करूँगा। कल्याण की ऐसी उदात्त विरासत अमर गुणातीत भावना द्वारा आज भी अखण्डित है.... अखण्डित रहने वाली है। आओ, हम सभी इस कल्याण योजना के भागीदार बने !

अंत में इस भव्य मंगलकारी—कल्याणकारी योजना में भक्तिपूर्ण दिल से अपना पूर्ण सहयोग देकर भगवत्स्वरूप संतों की प्रसन्नता व आशीष लूट लेने के लिए दिल्ली नगर निगम के इन्जीनियर इन चीफ श्री अम्बवानी साहब को हार्दिक बधाई देने हम कैसे भूलेंगे?

× ×

R.N. 28971/77 4/भगवत् कृपाः मार्च 1990 **D (DN) 362**

Statement about Ownership and other particulars about newspaper
'भगवत-कृपा'— 'THE DIVINE GRACE'
(Form IV Rule 8)

1. Place of Publication	:	Yogi Divine Society, A-103, Ashok Vihar, Ph-III, Delhi-52
2. Periodicity of its Publication	:	Monthly
3. Printer's Name	:	Sadhu Mukundjivandas
Nationality	:	Indian
Address	:	Yogi Divine Society, A-103, Ashok Vihar, Ph-III, Delhi-52
4. Publisher's Name	:	
Nationality	:	above
Address	:	
5. Editor's Name		
Nationality	:	above
Address	:	
6. Owner's Name	:	
Nationality	:	above
Address	:	

I, Sadhu Mukundjivandas, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/- **Sadhu Mukundjivandas**
Signature of Publisher

Date: 25th March, 1990

व्रतोत्सवसूची

1.	दि.	9.4.90	सोमवार	पूर्णिमा
2.	दि.	21.4.90	शनिवार	एकादशी, व्रत

PUBLISHED BY SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY,
A 103, Ashok vihar-III, Swaminararan Marg. Kakaji Lane,
Delhi-110 052. (India) Tel. : 7229327, 7128838
Printed at R.P. Printers, Shahadra, Delhi-110032